Sem. 6, DSE-3

Page No: ____
Date: __/__/__

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीयता

'आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्' कहकर हमारे प्राचीन वाङ्मय 'यजुर्वेद' में राष्ट्र की कल्याण-कामना की थी कि हमारे राष्ट्र में क्षात्रिय वीर, धनुर्धारी, लक्ष्यवेधी और महारथी हों। हमारे साहित्य में प्रायः हर युग में राष्ट्र की अखण्डता, एकता व समृद्धि की कामना की गयी है। किन्तु 1857 ई० के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ने हमारे देश में राष्ट्रीयता की भावना को चरम पर पहुँचाने का कार्य किया। हिन्दी जगत के साहित्यकारों ने भी इस भावना को देशवासियों के बीच भरने का महान दायित्व निभाया। ऐसे ही साहित्यकारों में सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी प्रबल राष्ट्रीय चेतना के द्वारा इस कार्य में महती भूमिका निभायी।

सुभद्राजी ने अपने काव्य-संग्रह 'मुकुल' और 'त्रिधारा' की संकलित रचनाओं में राष्ट्रीयता, प्रेम, वात्सल्य, भक्ति एवं प्रकृति से संबंधित भाव बिखरे पड़े हैं। इनमें छायावादी लाक्षणिकता भी है। किन्तु, सबसे प्रबल भाव तो राष्ट्रीयता का ही है। राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग लेनेवाली कवयित्री सुभद्राजी ने लक्ष्मीबाई की वीरता का ओजपूर्ण गान करते हुए 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' का शब्द-संधान किया। इस गीत ने ओजस्वी स्वर में पूरे देश में आत्माहुति का भाव भरने में सफलता पायी थी। देश की राष्ट्रीय चेतना को जगाने में सुभद्राजी ने विभिन्न उपकरणों का आश्रय लिया, वे निम्नतः हैं। —

① पौराणिक चरित्रों के चित्रण द्वारा कवयित्री ने स्वातंत्र्य युद्ध का शंखनाद किया था। भारतीयों को शासन-भय से मुक्त करने के लिए कृष्ण का संदर्भ प्रस्तुत किया गया —

"जेल! हमारे मनमोहन का प्यारा पावन जन्म-स्थान।
तुमको सदा तीर्थ मानेगा कृष्ण-भक्त यह हिन्दुस्थान॥"

② 1857 ई० के आन्दोलन के नायकों से राष्ट्र-भक्ति की प्रेरणा

लेने का आह्वान कवयित्री ने किया। 'झाँसी की रानी' कविता तो जन-जन के कंठ में बस गया था —

"चमक उठी सन सत्तावन वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

③ अपने युग के नायकों के सक्रेय आन्दोलन को भी कवयित्री ने अपनी कविताओं में स्वर दिया। गांधी, तिलक, लाजपत जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति उन्होंने अपनी श्रद्धा निवेदित की है —

"तिलक, लाजपत, गांधी जी भी, बन्दी कितनी बार हुए।
जेल गये जनता ने पूजा, संकट में अवतार हुए।"

'सेनानी का स्वागत' हो या 'कांग्रेस' कविता में सत्याग्रहजन्य निर्भयता का उद्घोष है —

"हमें नहीं भय संगीनों का, चमक रहीं जो उनके हाथ।
जरा नहीं डर उन तोपों का, गरज रहीं जो बल के साथ।"

राष्ट्र-चेतना का अलख जगाने में सुभद्राजी ~~अन्य~~ राष्ट्र-धारा के अन्य कवियों की अपेक्षा अधिक मुखर थीं और उनकी वाणी अंग्रेजी सत्ता को खुली चुनौती देती प्रतीत होती है। 'वीरों का कैसा हो वसंत' में कवयित्री की वाणी देश की युवा पीढ़ी को राग-रंग से दूर हो राष्ट्र-रंग की होली खेलने का निमंत्रण देती है — "भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान;
मिलने को आए आदि अंत
वीरों का कैसा हो वसंत।"

स्पष्टतः सुभद्राजी की कविताओं का मूल स्वर राष्ट्रीय है। उनमें राष्ट्रीयता के सम्पोषक तथा स्वातंत्र्य चेतना जगाने में उपयोगी समस्त उपादानों का प्रभावी उपयोग है। उन्होंने रावण एवं कंस के अत्याचारों का स्मरण कराते हुए अंग्रेजों से मुक्ति का रास्ता दिखाया। भारतीय वीरों एवं ललनाओं की बलिदानी परम्परा का स्मरण कराकर भारतीयों को आत्मोत्सर्ग का ~~पाठ~~ उन्होंने पाठ भी पढ़ाया।